

ਉਠੀਠੇ ਠੀਠੀਠੀ ਕਉ ਟ? ਠਠਠੇ ਟਠ ਠਠੀਠੀਠੇ ਠਠਠੀਠੀ ਠਠਠੀ ਠਠਠੀ ਠਠਠੀ ਟ?

ਨਬੀ ਮੁਹੰਮਦ -ਸਲਲਲਲਾਹੁ ਅਲੈਹਿ ਵ ਸਲਲਮ- ਬਿਨ ਅਬੁਲਲਾਹ ਬਿਨ ਅਬੁਲ ਮੁਤਲਿਬ ਬਿਨ ਹਾਸ਼ਿਮ, ਅਰਬ ਕੇ ਕਬੀਲਾ ਕੁਰੈਸ਼ ਸੇ ਹੈਂ, ਜੋ ਮਕਕਾ ਮੇਂ ਰਹਤਾ ਠਾ। ਆਪ ਇਸਮਾਇਲ ਬਿਨ ਇਬਰਾਹੀਮ -ਠਨ ਟੋਨੀਂ ਪਰ ਅਲਲਾਹ ਕੀ ਸ਼ਾਂਤਿ ਹੋ- ਕੀ ਨਸਲ ਸੇ ਠੇ।

ਜੈਸਾ ਕਿ ਠੋਲਡ ਟੇਸਟਾਮੇਂਟ ਮੇਂ ਉਲਲੇਖ ਕੀਠਾ ਗਠਾ ਹੈ, ਅਲਲਾਹ ਨੇ ਇਸਮਾਇਲ ਕੋ ਆਸ਼ੀਵਾਦ ਟੋਨੇ ਠੌਰ ਠਨਕੇ ਵੰਸ਼ ਸੇ ਠਕ ਮਹਾਨ ਸਮੁਦਾਠ ਕੋ ਨਿਕਾਲਨੇ ਕਾ ਵਾਦਾ ਕੀਠਾ ਠਾ।

"ਇਸਮਾਇਲ ਕੇ ਵਿਸ਼ਠ ਮੇਂ ਮੈਂਨੇ ਟੇਰੀ ਸੁਨ ਲੀ। ਟੇਖ, ਮੈਂ ਠਸਕੋ ਆਸ਼ੀਸ਼ ਟੂੰਗਾ, ਠਸੇ ਪਰਦਾਨ ਕਰੂੰਗਾ, ਠੌਰ ਬਹੁਤ ਬਡਾਠੰਗਾ, ਬਾਰਹ ਹਾਕਿਮ, ਵਹ ਜਨੇਗਾ, ਠੌਰ ਮੈਂ ਠਸਸੇ ਠਕ ਬਡੀ ਜਾਤਿ ਬਨਾਠੰਗਾ।" [136] ਠੋਲਡ ਟੇਸਟਾਮੇਂਟ, ਉਤਪਤਿ ਪੁਸਤਕ 17:20

ਠਹ ਸਬਸੇ ਬਡਾ ਪਰਮਾਣ ਹੈ ਕਿ ਇਸਮਾਇਲ, ਇਬਰਾਹੀਮ -ਠਨ ਟੋਨੀਂ ਪਰ ਅਲਲਾਹ ਕੀ ਸ਼ਾਂਤਿ ਹੋ- ਕੇ ਵੈਠ ਪੁਤ੍ਰ ਠੇ। ਠੋਲਡ ਟੇਸਟਾਮੇਂਟ, ਉਤਪਤਿ ਪੁਸਤਕ 16:11

"ਠੌਰ ਰਬ ਕੇ ਟੂਤ ਨੇ ਠਸਸੇ ਕਹਾ : ਸੁਨ, ਟੂ ਗਰਠਵਤੀ ਹੈ, ਠੌਰ ਟੇਰੇ ਠਹਾਠ ਠਕ ਪੁਤ੍ਰ ਹੋਗਾ, ਠੌਰ ਠਸਕਾ ਨਾਮ ਇਸਮਾਇਲ ਰਖਨਾ, ਕੌਠੌਂਕਿ ਰਬ ਨੇ ਟੇਰੀ ਵਿਨਠ ਕੋ ਸੁਨ ਲੀਠਾ ਹੈ।" [137] ਠੋਲਡ ਟੇਸਟਾਮੇਂਟ, ਉਤਪਤਿ ਪੁਸਤਕ 16:3

"ਇਬਰਾਹੀਮ -ਅਲੈਹਿਸਲਾਮ- ਕੀ ਪਤਨੀ ਸਾਰਾ ਨੇ ਅਪਨੀ ਮਿਸ਼ਰੀ ਟਾਸੀ ਹਾਜਰਾ ਕੋ ਕਨਾਨ ਕੀ ਠੁਮਿ ਮੇਂ ਇਬਰਾਹੀਮ ਕੇ ਟਸ ਸਾਲ ਕੇ ਨਿਵਾਸ ਕੇ ਬਾਦ ਲੀਠਾ, ਠੌਰ ਠਸੇ ਇਬਰਾਹੀਮ ਕੋ ਪਤਨੀ ਕੇ ਰੂਪ ਮੇਂ ਪਰਦਾਨ ਕੀਠਾ।" [138]

ਮੁਹੰਮਦ -ਸਲਲਲਲਾਹੁ ਅਲੈਹਿ ਵ ਸਲਲਮ- ਮਕਕਾ ਮੇਂ ਪੈਦਾ ਹੁਠ, ਠਨਕੇ ਪੈਦਾ ਹੋਨੇ ਸੇ ਪਹਲੇ ਠਨਕੇ ਪਿਤਾ ਕੀ ਮ੍ਰੁਤਠੁ ਹੋ ਗਈ ਠੀ। ਬਚਪਨ ਮੇਂ ਹੀ ਆਪਕੀ ਮਾਠ ਠੀ ਠਲ ਬਸੀਂ, ਟੋ ਆਪਕੇ ਟਾਦਾ ਨੇ ਆਪਕੀ ਟੇਖਠਾਲ ਕੀ। ਫਿਰ ਆਪਕੇ ਟਾਦਾ ਠੀ ਠਲ ਬਸੇ, ਟੋ ਆਪਕੇ ਠਠਾ ਅਬੂ ਟਾਲਿਬ ਨੇ ਆਪਕੋ ਸੰਠਾਲਾ।

ਆਪ ਅਪਨੀ ਸਠਠਾਈ ਠਵਂ ਅਮਾਨਤਦਾਰੀ ਮੇਂ ਪਰਸਿਠੁ ਠੇ। ਆਪ ਜਾਹਿਲੀਠ ਕੇ ਲੋਗੀਂ ਕੇ ਸਾਠ ਨ ਬੈਠਠੇ ਠੇ। ਨ ਠਨਕੇ ਸਾਠ ਮਨੋਰੰਜਨ ਠੌਰ ਠੇਲ ਮੇਂ ਠੌਰ ਨ ਨ੍ਰੁਤਠ ਠਠਾ ਗਾਠਨ ਮੇਂ ਠਾ ਸ਼ਰਾਬ ਪੀਨੇ ਮੇਂ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੋਠੇ ਠੇ ਠੌਰ ਨ ਹੀ ਇਨ ਕਾਮੀਂ ਕੇ ਕਰੀਬ ਜਾਠੇ ਠੇ। ਫਿਰ ਨਬੀ -ਸਲਲਲਲਾਹੁ ਅਲੈਹਿ ਵ ਸਲਲਮ- ਇਬਾਦਤ ਕਰਨੇ ਕੇ ਲੀਠ ਮਕਕਾ ਕੇ ਨਿਕਟ ਠਕ ਪਹਾਡ ਮੇਂ (ਹਿਰਾ ਗੁਠਾ) ਜਾਨੇ ਲਗੇ। ਇਸੀ ਸਠਾਨ ਪਰ ਆਪਰ ਪਹਲੀ ਵਹੁਠ (ਅਲਲਾਹ ਕਾ ਸੰਦੇਸ਼) ਆਠੀ। ਮਹਾਨ ਠਵਂ ਉਠਠ ਅਲਲਾਹ ਕੀ ਠੌਰ ਸੇ ਠਕ ਫ਼ਰਿਸ਼ਤਾ ਆਠਾ ਠੌਰ ਆਪਸੇ ਕਹਾ : ਪਠ, ਪਠ। ਨਬੀ -ਸਲਲਲਲਾਹੁ ਅਲੈਹਿ ਵ ਸਲਲਮ- ਪਠਨਾ-ਲਿਖਨਾ ਨਹੀਂ ਜਾਨਠੇ ਠੇ। ਆਪਨੇ ਠਰਮਾਠਾ : ਮੈਂ ਪਠਨਾ ਨਹੀਂ ਜਾਨਠਾ ਹੂੰ। ਫ਼ਰਿਸ਼ਤੇ ਨੇ ਟੋਬਾਰਾ ਆਗ੍ਰਹ ਕੀਠਾ। ਆਪਨੇ ਠਰਿ ਕਹਾ : ਮੈਂ ਪਠਨਾ ਨਹੀਂ ਜਾਨਠਾ ਹੂੰ। ਫ਼ਰਿਸ਼ਤਾ ਨੇ ਠਕ ਬਾਰ ਠੌਰ ਆਗ੍ਰਹ ਕੀਠਾ ਠੌਰ ਆਪਕੋ ਅਪਨੇ ਸਾਠ ਪਕਡ ਕਰ ਇਸ ਠਰਹ ਠੀਠਾ ਕਿ ਆਪਕੀ

हड्डी पसली एक हो गई और फिर कहा : पढ़। आपने फिर कहा : मैं पढ़ना नहीं जानता हूँ। तीसरी बार उन्होंने कहा : "अपने पालनहार के नाम से पढ़, जिसने पैदा किया। जिसने मनुष्य को रक्त को लोथड़े से पैदा किया। पढ़, और तेरा पालनहार बड़ा दयालु है। जिसने लेखनी के द्वारा ज्ञान सिखाया। इन्सान को उसका ज्ञान दिया जिसको वह नहीं जानता था।" [139] आपकी नबूवत का प्रमाण :

[सूरा अल-अलक़ : 1-5]

इसे हम आपकी जीविनी में पाते हैं। आप एक सच्चे एवं अमानतदार व्यक्ति के तौर पर जाने जाते थे। अल्लाह तआला ने कहा है :

"इससे पहले तो आप कोई किताब पढ़ते न थे और न किसी किताब को अपने हाथ से लिखते थे कि यह बातिल की पूजा करने वाले लोग शक में पड़ें।" [140] [सूरा अल-अनकबूत : 48]

रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- जिस बात का आह्वान करते, सबसे पहले उसे अपने आप पर लागू करते। आपके काम आपकी बातों की पुष्टि करते। आप अपने आह्वान के लिए कभी भी दुनिया में बदला नहीं चाहते थे। आपने गरीब, उदार, दयालु और विनम्र होकर जीवन बिताया। आप सबसे अधिक बलिदान देने वाले एवं लोगों के पास जो कुछ है, उसके बारे सबसे अधिक विमुख होकर रहे। अल्लाह तआला ने कहा है :

"यही वे लोग हैं, जिन्हें अल्लाह ने मार्गदर्शन प्रदान किया, तो आप उनके मार्गदर्शन का अनुसरण करें। आप कह दें : मैं इस (कार्य) पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता। यह तो सारे संसारों के लिए एक उपदेश के सिवा कुछ नहीं।" [141] [सूरा अल-अनआम : 90]

आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने अपनी नबूवत की सच्चाई पर कुरआन द्वारा प्रमाण पेश किए, जो कुरआन उन्हीं की भाषा में था और जो बयान एवं वाक्पटुता के शीर्ष पर था, जो उसे मानव की रचना से उपर करती है। अल्लाह तआला ने कहा है :

"क्या वे कुरआन पर विचार नहीं करते ? यदि वह (कुरआन) अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता, तो वे उसमें बहुत अधिक विरोधाभास पाते।" [142] [सूरा अल-निसा : 82]

"बल्कि क्या वे कहते हैं कि उसने इस (कुरआन) को स्वयं गढ़ लिया है ? आप कह दें कि इस जैसी गढ़ी हुई दस सूरतें ले आओ और अल्लाह के सिवा, जिसे बुला सकते हो, बुला लो, यदि तुम सच्चे हो।" [143] [सूरा हूद : 13]

"फिर यदि वे आपकी माँग पूरी न करें, तो आप जान लें कि वे केवल अपनी इच्छाओं का पालन कर रहे हैं, और उससे बढ़कर पथभ्रष्ट कौन है, जो अल्लाह की ओर से किसी मार्गदर्शन के बिना अपनी इच्छा का पालन करे ? निःसंदेह अल्लाह अत्याचार करने वाले लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।" [144] [सूरा अल-क़सस : 50]

जब मदीने में कुछ लोगों के यहाँ यह बात आम हो गई कि सूरज ग्रहण नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम- के बेटे इब्राहीम की मौत के कारण लगा है, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक भाषण दिया और एक ऐसी बात कही, जो आज तक सूरज ग्रहण के संबंध में लोगों के बीच प्रचलित अंधविश्वासों का खंडन करती है। इसे आपने चौदह शताब्दियों से भी पहले स्पष्ट और साफ़ रूप से कहा था :

"सूर्य एवं चाँद अल्लाह की निशानियों में से दो निशानियाँ हैं। उनका ग्रहण किसी के मरने या पैदा होने से नहीं होता। अतः जब तुम लोग ऐसा होते देखो, तो अल्लाह को याद करो और नमाज़ पढ़ो।" [145] [सहीह बुखारी]

यदि नबी झूठे होते, तो अनिवार्य रूप से अपने संदेशवाहक होने की बात लोगों को मनवाने के लिए इस अवसर का लाभ उठाते।

उनकी नबूवत का एक प्रमाण ओल्ड टेस्टामेंट में उनके नाम एवं गुणों का उल्लेख भी है।

"एक पढ़ना न जानने वाले व्यक्ति को किताब दी जाएगी और उससे कहा जाएगा कि इसे पढ़ो, तो वह कहेगा : मैं पढ़ना नहीं जानता हूँ।" [146] [ओल्ड टेस्टामेंट, यशायाह (००००००) की किताब 29:12]

मुसलमान इस बात पर विश्वास नहीं रखते कि वर्तमान में मौजूद ओल्ड टेस्टामेंट और न्यू टेस्टामेंट अल्लाह की तरफ से हैं, क्योंकि उनमें बदलाव हो चुके हैं। परन्तु वे इस बात पर विश्वास रखते हैं कि उन दोनों का स्रोत सही है। दोनों दरअसल तौरात और इंजील हैं, (जिन्हें अल्लाह ने अपने नबियों मूसा एवं ईसा -उन दोनों पर अल्लाह की शांति हो- की ओर वही की थी।। इसलिए ओल्ड टेस्टामेंट और न्यू टेस्टामेंट में कुछ चीज़ें पाई जाती हैं, जो अल्लाह की ओर से हो सकती हैं। अतः मुसलमान मानते हैं कि यदि यह भविष्यवाणी सही है, तो यह नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के बारे में बताती है और यह सही तौरात के अवशेषों में से है।

पैगंबर मुहम्मद जिस संदेश की ओर बुलाते थे, वह शुद्ध विश्वास है। वह दरअसल (एक पूज्य पर ईमान और केवल उसी की इबादत करना) है। आपसे पूर्व के सभी नबियों का यही संदेश था, जिसे आप सभी इनसानों के लिए लाए थे, जैसा कि कुरआन में आया है :

"(हे नबी!) आप लोगों से कह दें कि हे मानव जाति के लोगो! मैं तुम सभी की ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ, जिसके लिए आकाश तथा धरती का राज्य है। कोई वंदनीय (पूज्य) नहीं है, परन्तु वही, जो जीवन देता तथा मारता है। अतः अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके उस उम्मी नबी पर, जो अल्लाह पर और उसकी सभी (आदि) पुस्तकों पर ईमान रखते हैं और उनका अनुसरण करो, ताकि तुम मार्गदर्शन पा जाओ।" [147] [सूरा अल-आराफ़ : 158]

मसीह को पृथ्वी पर किसी ने उतना सम्मान नहीं दिया, जितना सम्मान मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- ने उन्हें दिया।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "मैं मरयम के बेटे ईसा का लोगों में सबसे निकटमत व्यक्ति हूँ। लोगों ने प्रश्न किया : हे अल्लाह के रसूल ! वह कैसे ? तो आपने फरमाया : सभी नबी भाई हैं, जैसे एक बाप और विभिन्न माँओं की संतान। उनका धर्म एक है। हमारे बीच कोई और नबी नहीं था (ईसा एवं मेरे बीच)।" (सहीह मुस्लिम)

कुरआन में नबी मुहम्मद से ईसा -उन दोनों पर अल्लाह की शांति हो- का अधिक बार उल्लेख (4 बार की तुलना में 25 बार) हुआ है।

कुरआन के अनुसार ईसा की माँ मरयम को संसार की दूसरी महिलाओं पर श्रेष्ठता दी गई है।

इसी तरह मरयम वह अकेली महिला हैं, जिनके नाम का कुरआन में उल्लेख हुआ है।

कुरआन में मरयम के नाम से एक पूरी सूरात मौजूद है। "ऐन अला-अल-हक़ीक़ह" फ़ातिन सब्री,

000.0000000000.000

यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई का सबसे बड़ा प्रमाण है। यदि आप झूठे नबी होते तो आपकी पत्नियों, माँ-बाप या बच्चों का उल्लेख होता। यदि आप झूठे नबी होते तो आप ईसा - अलैहिस्सलाम- की महिमा नहीं करते और उनपर ईमान को मुसलमान के ईमान का एक स्तम्भ घोषित नहीं करते।

नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- एवं हमारे समय के किसी भी संत या पुरोहित के बीच एक हल्की सी तुलना हमें आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की सच्चाई का पता देती है। आपने पैसे, प्रतिष्ठा या यहाँ तक कि किसी भी पुरोहित पद से मिलने वाले सभी विशेषाधिकारों को अस्वीकार कर दिया। आपने एतराफ़ को नहीं सुना और न विश्वासियों के पापों को क्षमा कर देने का दावा किया। आपने सीधे सृष्टिकर्ता की ओर लौटने की बात कही।

आपकी नुबवत की सच्चाई के सबसे बड़े प्रमाणों में से एक आपकी दावत का चारों दिशा में फैल जाना, लोगों का उसको स्वीकार करना और उसे अल्लाह की मदद प्राप्त होना है। अल्लाह ने मानव इतिहास में कभी नबी होने का झूठा दावा करने वाले किसी व्यक्ति को सफलता प्रदान नहीं की है।

अंग्रेजी दार्शनिक थॉमस कार्लाइल (1881-1795) ने कहा है : "इस युग के किसी भी सभ्य व्यक्ति के लिए यह सबसे बड़ी शर्म की बात है कि वह कुछ लोगों की कही हुई इस बात को सुने कि इस्लाम एक झूठा धर्म है और मुहम्मद एक धोखेबाज़ हैं। हमें ऐसी बेवकूफ़ाना और शर्मनाक बातों तथा अफवाहों के विरुद्ध लड़ना चाहिए। क्योंकि उस दूत ने जो संदेश दिया, वह हम जैसे लगभग दो सौ मिलियन लोगों के लिए बारह शताब्दियों से प्रकाशमान दीपक है। उनको उसी अल्लाह ने पैदा किया है, जिसने हमें पैदा किया है। मेरे भाइयों! क्या आपने कभी देखा है कि एक झूठ बोलने वाला आदमी धर्म बना सकता है और फैला भी सकता है? अल्लाह की शपथ! यह आश्चर्यजनक है। झूठा आदमी ईंटों का एक घर नहीं बना सकता है, यदि वह चूने, प्लास्टर, मिट्टी आदि के गुणों से अवगत नहीं है। वह

जो भी घर बनाएगा वह मलबे का ढेर और सामग्री के मिश्रण का टीला होगा। वह अपनी नींव पर बारह शताब्दियों तक रहने योग्य नहीं होगा, जिसमें दो सौ मिलियन लोगों का निवास हो। वह ढह जाएगा और इस तरह नेस्तनाबूद हो जाएगा, जैसे था ही नहीं।" [150] पुस्तक "अल-अब्ताल"

ଓଡ଼ିଆ ଚିତ୍ରଣ ଶିଳ୍ପ କା ଚିତ୍ରଣ

୧୧୧୧୧୧: [୧୧୧୧୧: // ୧୧୧୧୧୧୧.୧୧୧/୧୧୧୧/୧୧/୧୧/୧୧୧୧/54/](#)

୧୧୧୧୧୧ ୧୧୧୧୧୧: [୧୧୧୧୧୧: // ୧୧୧୧୧୧୧.୧୧୧/୧୧୧୧/୧୧/୧୧/୧୧୧୧/54/](#)

୧୧୧୧୧୧୧ 5୧୧ ୧୧ ୧୧୧ 2026 08:21:02 ୧୧